Topic ____ Date ____

Concept of Drama & Art in education

UNIT-I

			Sign
1.	Understanding Drama and Art in education		
2.	Meaning and concept of Art and art in education.	1-2	
3.	Understanding aesthetics and its education	3-4	
4.	Drama and Art as pedagogy of leaning and development understanding drama and art and their importance in teaching leaning of difference subject at school level	5-7	
5.	Range of Art activities in Drama.	8-9	
6.	Expressing responding and appreciating drama.	"	
7.	Exposure to selective basic skills required for drama.	10-13	
8.	Drama facilitating interest among student: planning and implementing activities.	14	
9.	Enhancing leaning through drama for children with and without special needs strategies and adaption		

UNIT-2

10.	Media and electronic Arts		
11.	Range of art activities in media and electronic and electronic arts.		
12.	expressing responding and appreciating media		
13.	exposure to selective basic skills in media and electronic arts.		
14.	Media and electronic arts facilitating interest among students: planning and implementing activities.		
15.	Enhancing learning through media and electronic special needs. Stratiges and adaption.		

22/3/2?

Topic: Drama And Art In Education Date

S.No.

A. Unit - 1 Understanding Drama and Art in Education

1. Meaning and concept of Drama and Art in Education.
2. Understanding aesthetics and its education relevance.
3. Drama and Art as pedagogy of learning and development understanding drama, art (visual)
4. Range of art activities in drama.
5. expressing responding and appriciating drama. Exposure to selective basic skills required for drama. Drama faciliating interest among student planning and implementing activites. enhancing learning through drama for children with and without special needs.

B. Media and Electronic Art

1. Range of are activities in media and electronic arts.
2. expressing responding and appreciating media and electronic.
3. exposure to selective basic skills in media and electronic arts.
4. media and electronic arts faciliating interest among student planning and implementing activities.
5. enhancing learning through media and electronic special needs. Strategies and adaption.

Topic Creative Drama Date

कला

कला एक सजीव क्रिया है। कला से समाज सुन्दर रूप से संचालित करने की शक्ति होती है कला से मनोवैज्ञानिक प्रभाव सार्वभौमिक, सत्ता का अनुभव किया जा सकता है शारीरिक तथा आध्यात्मिक पीड़ा से कला के द्वारा ही मुक्ति प्राप्त होती है भारतीय परंपरा के अनुसार कला उन सारी क्रियाओं को कहते है जिनमें कौशल को महत्वपूर्ण माना है कला एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण है जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है

कला ही आत्मिक शांति का माध्यम है यह कठिन तपस्या है साधना है इसी के माध्यम से कलाकार सुनहरी और इच्छानुकी आत्मा से स्वप्निल विचारों को साकार रूप देता है कला में ऐसी शक्ति होनी चाहिए कि वह लोगों को संकीर्ण सीमाओं से उठकर उसे ऐसे ऊँचे स्थान पर पहुँचा दे जहाँ मनुष्य केवल मनुष्य रह जाता है

कला का अर्थ :- कला मानव संस्कृति का आज है कला शब्द इतना व्यापक है कि विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएँ केवल एक विशेष पक्ष को छूकर रह जाती है कला का अर्थ अभी तक निश्चित नहीं हो पाया है यद्यपि हजारों परिभाषाएँ की गई है भारतीय परंपरा के अनुसार कला उन सारी क्रियाओं को कहते हैं जिनमें कौशल अपेक्षित हो कला व्यक्ति के मन में बनी स्वार्थ, परिवार, क्षेत्र, धर्म, भाषा और जाति आदि की सीमाएँ मिटाकर विस्तृत और व्यापकता प्रदान करती है कला ही है जिसमें मानव मन में संवेदनाएँ उभारने, प्रवृत्तियों को ढालने तथा चिंतन को मोड़ने, अभिरुचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता है कला व्यक्ति के मन को उदात्त बनाती है वह व्यक्ति को "स्व" से निकालकर

Topic ______ Date ______

"वसुधैव कुटुम्बकम" से जोड़ती है "कलात्मक जीवन जीविका है महात्मा गाँधी के अनुसार एक अनुभव दूसरों तक पहुँचाना ही कला है

कला शब्द की उत्पत्ति

कला शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की "कल" धातु से मानी जाती है जिसका अर्थ करना, गिनना, उत्पन्न करना या नवीन रचना करना माना जाता है कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार 'कला' शब्द का अर्थ एक ऐसे कृति है जो मानवीय क्रिया से उत्पन्न होती है जिसके विशेष गुण ध्यान पूर्व दृष्टि संकल्पन तथा स्पष्ट प्रकटन आदि है कला एक शिल्प, कौशल हुनर आदि कहलाती है

भारतीय कला का इतिहास

भारतीय कला का इतिहास अत्यंत प्राचीन है भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार कला शब्द का प्रयोग प्रथम बार ऋग्वेद में हुआ। यजुर्वेद में 30वें अध्याय में कलाओं का उल्लेख मिलता है ऐतिहासिक अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि उस काल के जन साधारण तथा समाज और शिष्ट वर्ग कला के महत्व से अवश्य परिचित होंगे। प्राचीन मे कलाओं को दो भागों में विभाजित किया था।

पाश्चात्य दृष्टि से 'कला' शब्द का अर्थ

पाश्चात्य जगत में कला शब्द की उत्पत्ति यूनानी भाषा के शब्द 'टेक्नीक' से मानी जाती है इसका अर्थ निपुण, प्रवीण, कुशल विशेषज्ञों से संबंधित है प्रयास माना जाता है ललित कला को अंग्रेजी में फाइन आर्ट कहा जाता है

Topic ____________________ Date ________

कला की परिभाषाएँ

जीवन में संघर्षपूर्ण अनुभवों से लाभ प्राप्त करता हुआ मनुष्य सुख सुविधाओं की ओर अग्रसर होता है। कला के विषय में देशी तथा विदेशी विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए उनकी कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार है

क्रोचे के अनुसार :- सभी मन कलाएँ निर्धारित रूप से दिव्य तथा पवित्र होती हैं

दो भागों में
- मानव उपयोगी कलाएँ
- दैवी देवताओं से संबंधित कलाएँ

कला की प्रकृति

कला का उद्गम सौंदर्य की मूलभूत प्रेरणा से हुआ है। प्रकृति के रमणीय दृश्य जैसे सौंदर्य पूर्णता से मानव मन की जागृति हुई। मनुष्य की इस स्वाभाविक सृजनात्मक प्रवृत्ति के फलस्वरूप अनेक शिल्प और कौशल का जन्म हुआ। कला के प्रवृत्ति के विषय में कुछ अधिक जानने से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि आनंद क्या है। किसी सुंदर वस्तु को देखने पर रस का एहसास हमारा मन करता है उस एहसास को सौंदर्य कहा जाता है। कला के क्षेत्र में सौंदर्य कलाकार के हृदय में उत्पन्न होता है और अनेक माध्यमों द्वारा अभिव्यक्ति का अंतिम ही आनंद की उपलब्धि करना होता है। कला प्रत्येक व्यक्ति के अंदर होती है। कला का व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्व माना जाता है

Topic ______________________ Date ________

कला का वर्गीकरण

कला का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। विचारकों ने भी समय-समय पर कला तत्व की व्याख्या अपने-अपने ढंग से की है। उन्होंने कला को तीन भागों में बांटा है

① आध्यात्मिक स्वरूप
② रूपवादी स्वरूप
③ भावनात्मक स्वरूप

विद्वानों ने एक वर्ग में कला सौंदर्य को अपार्थिव माना है इस वर्ग में कला को आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान किया है। दूसरे वर्ग के विचारकों के अनुसार कला का सौंदर्य वस्तु के आकार एवं स्वरूप से होता है वे कला को स्वयं में ही एक सिद्धि मानते हैं रूपवादी विचारकों ने सौंदर्य के रूप की अभिव्यक्ति के लिए कला में प्रस्तुत सुव्यवस्था, निर्विवादता, एकरूपता, औचित्य, संगीत एवं कोमलता आदि तत्वों को प्रधान माना है। तीसरे वर्ग के अनुसार कला को सौंदर्य भाव के रूप में माना जाता है कि अभिव्यक्ति मानकर इसे रागात्मक व्यक्तिकरण अथवा अनुभूति के रूप में स्वीकार करता है

* माल्य ग्रन्थ विकल्प → माला गूंथना
* कौचुमार योग → कुरूप को सुंदर बनाना
* हस्तलाघव → हाथ की फुर्ती
* चित्र शाकापूपभक्ष्य → विकार क्रिया
* सूचीकर्म → सीना
* तक्षकर्म → बेलबूटे बनाना या खुदाई करना
* प्रहेलिका → पहेली बूझना
* बाल-क्रीडा → बच्चा खिलाना
* यंत्र-मातृका → यंत्र निर्माण

Topic ______ Date ______

भाषा और संस्कृति

संस्कृति और सभ्यता एक ही सिक्के के पहलू को कहा जा सकता है। सामान्य भाषा में ये दोनों शब्द मानव विकास के लक्षणों को व्यक्त करते हैं। इतिहास में मानव की उन्नति को दो पहलुओं का उल्लेख किया गया है भौतिक और अधिभौतिक विविध भौतिक उपकरणों के विकास अनुरूप को अधिकाधिक जीवन सुविधाएँ जुटाना, गीत कौशल सज्जा समय एवं वातावरण के अनुसार भोग-विलास की विभिन्न सामग्रियाँ जो औपचारिक जीवन को प्रदत्त करती हैं ये मानव की भौतिक सफलता है।

अधिभौतिक पहलु द्वारा मानव के हित में उपलब्ध उद्गम जो आध्यात्मिक उपकरणों के विकास से मनुष्य में चिंतन व्यवस्था मूल तत्व के प्रति जिज्ञासा, विश्वास, नैतिकता जीवन मर्यादाएँ, आचरण व्यवहार आदि दार्शनिक विषय व्यक्त करते हैं।

सांस्कृतिक मूल्यों का विकास

मानव के निर्वाह हेतु भौतिक आवश्यकताओं के साथ-साथ आध्यात्मिक आवश्यकताओं की संपूर्ति की आवश्यकता है। प्रत्येक मानव भौतिक सुख सुविधाओं, रोटी, रोटी के अतिरिक्त आध्यात्मिक आवश्यकताओं अर्थात आत्मा का ज्ञान हेतु विभिन्न माध्यमों द्वारा चिंतन करता रहता है।

इसी कारण भारतीय संस्कृति की व्यापक भावना ही है। भारतीय संस्कृति की मुख्य कल्याण आध्यात्मिक भावना ही है। भारतीय संस्कृति का यह स्वरूप प्राचीन ग्रंथों, शिक्षा, शास्त्रों, दर्शन शास्त्र, मनोविज्ञान, संस्कृत वाङ्मय हिन्दी साहित्य एवं अन्य कलाओं में स्पष्ट देखा जा सकता है।

Topic ______ Date ______

कला का महत्व

प्राचीन काल में भारतीय कलाओं की भागीरथी कल्याण भावना के आधार भूमि पर प्रवाहित होती है। स्वान्तः सुखाय कला का प्रयोजन आत्मकल्याण तथा बहुजन हिताय का प्रयोजन कल्याण रहा है। भारतीय दर्शन की यह विशेषता है कि यह मानव के समस्त क्रियाकलापों को पवित्र रूप देने हेतु देवताओं में अपना आरोपण करता है। समस्त विद्या एवं कलाओं की देने वाली शक्ति भगवती वीणावाणी को उपास्य बनाया गया है। कला की साधना को वेद मंत्रों के उच्चार से कम पुनीत नहीं समझा जाता है। प्राचीन काल के ऐतिहासिक अध्ययन से ज्ञात होता है कि बड़े-बड़े महर्षि कलाकार हुआ करते थे जिनके प्रति समाज में पूज्य भावना व्याप्त थी।

मध्य काल तक आते-आते कला की प्रकृति रोजमुखी हो गई। विद्वान राजस कला उसे मानते हैं जिसका प्रयोजन लौकिक जीवन को सुखमय बनाने के लिए निर्मित मनोरंजन करना होता है। कला का अंतिम लक्ष्य भौतिक संसार के ऊपर उठकर ऐसी मधुमय अवस्था को प्रदान करता है जिसमें भौतिक द्वंद्वों के लिए लेशमपि स्थान नहीं।

"विश्रान्तिर्यस्य सम्भोगे सा कला न मता कला।
लीयते परमानन्दे ययात्मा सा परा कला॥"

'कला भावनात्मक अनुभूति को प्रकट करने का सरल और आकर्षक साधन है। कला प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का शक्तिकर माध्यम है। किसी व्यक्ति के जीवन में कलात्मक गुण एवं दक्षताएं जैसे मधुर बोलना, चित्रकला, संगीतकला

Topic ______ Date ______

मूर्तिकला, काव्यकला, आभूषण वस्तु निर्माण कला न हो तो इनका जीवन अधूरा एवं नीरस रहेगा।

संगीत कला का जड़-चेतन दोनों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। मनुष्य को भी संगीत, नाटक, नृत्य, काव्य आदि कला से प्रसन्नचित किया जा सकता है।

Topic ______ Date ______

बालक के सर्वांगीण विकास में कला शिक्षा का महत्व

बच्चों को बचपन से ही कला एवं सृजनात्मक क्रियाओं को लगाने से उन्हें अभिव्यक्ति को व्यक्त करने का अवसर मिलता है। बचपन में कला का बहुत ही महत्व होता है। इसी कारण इस समय अध्यापक बच्चों की सृजनात्मक को देखकर उनकी रचनात्मक क्षमता को बढ़ा सकता है। जिसमें बच्चों को शारीरिक मानसिक एवं बौद्धिक विकास के साथ-साथ स्वाभाविक जीवन भी सुखद एवं आनंदमय बन जाता है।

कला शिक्षा के उद्देश्य

1. बच्चों को सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साधन प्रदान करना
2. बच्चों को समय का व्यावहारिक रूप से सदुपयोग कर सिखाना
3. विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण करना।
4. बच्चों की मानसिक शारीरिक रुचि का विकास करना
5. कला के माध्यम से खेल-खेल में अध्यापन कार्यों में ध्यान केंद्रित करना।
6. भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं के प्रति श्रद्धा एवं अनुराग उत्पन्न करना
7. बालकों में सौंदर्यानुभूति की शक्ति जाग्रत करना।
8. बेकार एवं पुरानी वस्तुओं का सदुपयोग करना सिखाना।
9. बच्चों को आत्मनिर्भर करने की शक्ति व क्षमता जाग्रत करना
10. ललित कलाओं का ज्ञान देना।

कला शिक्षा के माध्यम से बालकों में निहित प्रतिभाओं गुणों और शक्ति को निम्न प्रकार से विकसित करना जिसमें बालकों का सर्वांगीण का विकास होता है। विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ता है।

Topic ____________________ Date ________

शारीरिक एवं मानसिक शक्ति का विकास

विद्यालयों के खेल के मैदान में खेल व्यायाम, योगासन इत्यादि से बच्चों का शारीरिक विकास किया किया जा सकता है। कलात्मक क्रियाओं जैसे नृत्य-संगीत इत्यादि से बच्चे आनंद एवं खुशी का अनुभव करते हैं कोई कार्य करना, तो किसी से बातें करना या कुछ खाना भी अच्छा नहीं लगता अर्थात स्वस्थ शरीर, कलात्मक क्रियाएँ अति आवश्यक हैं।

भावनात्मक शक्ति का विकास

मानवीय भावनाओं का भंडार जिन्हें वह विभिन्न कला के माध्यम से प्रकट करता है। बच्चों में आगे बढ़ने की भावना, बदला लेने की भावना, कलाकार खिलाड़ी बनने की भावना समयानुसार बनती रहती है। बच्चों की इस भावना को अच्छे कार्यों की ओर जोड़ने के लिए उन्हें कला के माध्यम से नए-नए अवसर प्रदान किए जाते हैं। भावनात्मक शक्ति ही मानव बालक के मन को अच्छे मार्ग की ओर प्रेरित करती है।

कल्पना शक्ति का विकास

प्रत्येक बालक में कल्पना शक्ति होती है परन्तु कला के बिना इसका विकास संभव नहीं हो पाता। कला के माध्यम से उसे कल्पना को साधन व अवसर प्रदान किए जाते हैं बचपन की कल्पना ही मानव को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करती है। यह जीवन में सृजनशीलता का विकास करती है। पक्षियों की तरह उड़ान भरने की कल्पना के आधार पर ही हवाई जहाज का आविष्कार हुआ। कला शिक्षा के द्वारा विद्यालयों में अभ्यास करते-करते

Topic ______ Date ______

कल्पना शक्ति का विकास होता है। जितना अधिक अभ्यास करेंगे कल्पना शक्ति उतनी ही ज्यादा प्रबल होगी।

स्वच्छता एवं सौंदर्यानुभूति का विकास

प्रकृति की प्रत्येक वस्तु में आकर्षण एवं सौंदर्य होता है। मानव की आत्मा में भी सुंदरता विद्यमान रहती है। कला शिक्षा से सौंदर्य अनुभूति को विकसित करने में सहायता मिलती है। यदि बच्चों द्वारा बेकार पुरजे व माध्यम से उपयोगी वस्तुएँ बनाकर उन पर रंग करके चित्र बनाकर सुंदर व आकर्षक बनाया जा सकता है। एक और जहाँ बेकार और पुराना सामान प्रयोग में आ जाएगा और उपयोगी वस्तुओं को सुंदर ढंग से सजाकर रखने से वातावरण सुंदर व सुहावना बनेगा। ऐसी आकर्षक वस्तुएँ पुस्तकदान, गुलदस्ता, पेंटिंग, बैग, सजावटी सामान के विक्रय से स्वरोजगार और बालक की क्रियाशीलता को प्रोत्साहन मिलेगा।

सृजनशीलता और आत्म अभिव्यक्ति का विकास

सृजनशीलता मानव की जन्मजात प्रवृत्ति है विभिन्न कलाओं द्वारा इसको अभिव्यक्ति का अवसर मिलता विद्यालय पत्रिका, विद्यालय के विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता का दर्पण होती है। जिस पर कलात्मक चित्र लिख कविताएं व्यंग्य चित्र आदि लिखकर यह चित्रित करके प्रत्येक सप्ताह पाक्षिक या मासिक एक बार सूचनापट पर लगाई जा सकती है। सूचना के साथ साथ रुचि का भी यह सुन्दर और सरल उपाय है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रदर्शन से कला एक दूसरे को निकट लाती है

Topic ______ Date ______

अध्ययन और अध्यापन में सहायता

अध्ययन — जहाँ शिक्षा विद्यालयों में विद्यार्थियों के अध्ययन तथा शिक्षकों के अध्यापन में सहायता प्रदान करता है। बच्चे खेल विधि के द्वारा गिनती, रंगों के नाम इत्यादि के नाम सीखते हैं।

खेल-खेल में बच्चों को शैक्षिक सहायता सामग्री द्वारा सिखाया जाता है। पहियों या चित्र दिखाकर ऐतिहासिक इमारतों के मॉडल जानकारी दी जा सकती है। चूँकि बच्चे मॉडल या चित्र देखने का आनन्द लेते हैं और देखते-देखते सीख जाते हैं।

खाली समय का सदुपयोग

अंग्रेजी में कहावत है "Time is money" अर्थात समय ही धन है। मनुष्य का दिमाग सदा ही कार्य करता है। खाली मस्तिष्क को शैतान का घर कहा जाता है। बच्चों को कलात्मक क्रियाओं से आनन्द का अनुभव होता है। अतः बच्चों की रुचि ललित कलाओं में बढ़ाकर उसे कलात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करेंगे तो वह कोई नई रचनात्मक कार्य करेगा।

External Examiner
5/06/17

Topic ______ Date ______

कर्तव्यपरायणता और देश के विकास के लिए

किसी भी कला से बच्चों को कर्तव्य पूरा करने की भावना का विकास होता है। कला को देखकर सुनकर तथा चमत्कार प्रसन्नता का अनुभव करता है। कलाकार अपना कर्तव्य समझता है। कि वह ऐसी कलात्मक रचना करे जिसमें "सत्यम् शिवम् सुंदरम्" तीनों का गुण विद्यमान हो जो समाज के लिए सत्य तथा कलात्मक अथवा कल्याणकारी रचना करे देश में राष्ट्र भक्ति एकता की और प्रेरित वाली कविताएँ तथा गीतों ने देश के जान न्यौछावर करने वाले सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर, राजगुरु, गोविंद सिंह तथा अनेक नवयुवकों को देश पर शहीद होने के लिए तैयार किया अतः प्राथमिक स्तर पर ललित कला को माध्यम बनाकर अध्यापन में रुचि उत्पन्न करनी चाहिए। इन सभी ने राष्ट्र के लिए अपनी जान न्यौछावर कर दी थी तथा उन्होंने अपने देश के लिए अनेक क्रांतिकारी कार्य किए।

कलात्मक गतिविधियों द्वारा मानवीय गुणों का विकास

प्रकृति के रचना के अनुसार मानव का स्वभाव है कि वह हर पल तन से अथवा मन से कोई न कोई कार्य करता रहता है। जो कार्य मनुष्य अपनी कल्पनाओं तर्क वितर्क विचार विश्लेषण शक्ति का प्रयोग करें प्रतिपादन करता है। उन्हें सृजनात्मक गतिविधियां कहा जाता है। जैसे कला साहित्य संस्कृत विज्ञान के क्षेत्र में कई प्रकार की शैक्षिक गतिविधि प्रारंभ से चली आ रही है। प्रत्येक बालक की किसी न किसी क्षेत्र में रुचि अवश्य होती है। तथा रूप देता है। और एक दिन उसके द्वारा किया गया परिश्रम व उसकी सच्ची लगन रंग लाती है। और वह अपनी प्रतिभा गुणों को

Topic ______ Date ______

समाज एवं व्यक्ति के रंगमंच पर आत्मविश्वास लेकिन प्रस्तुत करता है।

<u>उदाहरणस्वरूप :-</u>

राजा दुष्यंत के पुत्र भरत का बचपन जंगली जानवरों जैसे शेर, चीता, बाघ इत्यादि के साथ खेलने से व्यतीत हुआ। परिणामस्वरूप भरत शक्तिशाली न्यायप्रिय निर्भीक राजा सिद्ध हुआ। उसी के नाम पर भारत का नाम पड़ा। मस्तिष्क तथा कल्पना का एक सामंजस्य सृजनात्मक गतिविधियाँ हैं जैसे माइम शोन्टिंग, मौनो एक्टिंग इत्यादि

विद्यालय में अध्यापक का कार्य विद्यार्थियों को पढ़ाना, ज्ञान देना, जानकारी देना, भावानुभूति करवाना, क्रियात्मक, अभिव्यक्ति करवाना तथा भावों की जानकारी देना है इसके लिए बालकों को अभिनय सिखाया जाता है जिसमें बच्चों को डाकिया, मैया, नौकर, डॉक्टर, चोर, सिपाही जोल, बहू इत्यादि बनाया जाता है अभिनय सिखाने की इस विधि में बच्चे सीख लेते हैं और खेल के माध्यम से उनकी उपयोगिता तथा कार्यों को भी जानकारी प्राप्त करते हैं Mime Mono acting and Role playing के माध्यम से वह अभिनय ऐसे उपकरण तथा क्रियाओं की सहायता से करवाए जाते हैं बालक की क्षमताओं के विकास के लिए निम्न सृजनात्मक क्रियाएँ महत्वपूर्ण हैं

Topic ______ Date ______

Creative Drama :- बालक के जीवन में विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक क्रियाओं का विशेष महत्व है संस्कृत एक ऐसा माध्यम है जिसमें कोई भी छात्र व अध्यापक बातों तथा तथ्यों को उचित व भली-भांति समझ सकता है संस्कृति व सांस्कृतिक कार्यक्रमों को हमारे जीवन में विशेष महत्व है विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रमों को करवाने का मुख्य साधन नाटक व ड्रामा ही होता है ड्रामे के द्वारा छात्रों को विभिन्न प्रकार की नैतिक कहानियाँ व सांस्कृतिक कहानियाँ भली-भाँति प्रदर्शित करके दिखाई जाती है

सांस्कृतिक क्रियाएँ :- हमारे जीवन में सांस्कृतिक तथा साहित्य क्रियाओं का विशेष महत्व है यह सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग है बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए यह क्रियाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है नृत्य आदि क्रियाएँ से शारीरिक मांसपेशियों का व्यायाम होता है जिससे स्वास्थ्य ठीक रहता है शरीर में चुस्ती और ताजगी आती है संगीत में मनुष्य अपने आप को भूलाकर आनन्द विभोर हो जाता उठता है साहित्य क्रियाओं से मनुष्य को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में आत्मबल मिलता है

Topic ________ Date ________

यह क्रियाएँ विवाह शादियों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जैसे गाना बजाना इत्यादि

नई क्रियाएँ किस प्रकार की होती है

(i) साहित्य क्रियाएँ :- जैसे वाद-विवाद, भाषण, विचार-विमर्श प्रश्नोत्तरी तथा सिम्पोजियम इत्यादि।

(ii) खेल :→ विभिन्न प्रकार के शारीरिक गतिविधियों के खेल

(iii) सांस्कृतिक :→ जैसे संगीत (भजन, गजल, लोकगीत, समूह गीत

(iv) नृत्य :→ लोक नृत्य, समूह नृत्य, शास्त्रीय नृत्य आदि

सांस्कृतिक क्रियाओं के लाभ

(1) शारीरिक, मानसिक व सामाजिक विकास होता है
(2) दमित इच्छाओं की पूर्ति होती है
(3) प्राचीन संस्कृति की सुरक्षा होती है
(4) खाली समय का सदुपयोग होता है
(5) व्यवसायिक कुशलता का विकास होता है
(6) सहयोग की भावना व्यक्त करता है
(7) दूसरे के विचारों को सुनने का सुअवसर प्राप्त होता है
(8) छात्रों में सृजनात्मक शक्ति का विकास होता है

Topic ______ Date ______

सुझाव

(1) इन क्रियाओं का चयन बच्चों की रुचि के अनुसार होना चाहिए।
(2) इन क्रियाओं के विकास के लिए बच्चों को अवसर प्रदान किया जाए।
(3) विषय में निपुण अध्यापकों की नियुक्ति की जाए।
(4) छात्रों की शारीरिक व मानसिक योग्यता के अनुसार क्रियाएँ करवानी चाहिए।
(5) बच्चों को इन क्रियाओं में भाग लेने के लिए जबर्दस्ती नहीं करनी चाहिए।
(6) बच्चों को संपूर्ण वातावरण प्रदान करना चाहिए ताकि अन्य बच्चों को भी प्रोत्साहित किया जा सके।

मनोरंजन क्रियाएँ

वैज्ञानिक युग में मानव भौतिकवाद की तरफ बढ़ता जा रहा है भौतिक सुविधाओं के कारण मनुष्य के पास बहुत खाली समय हो गया है परन्तु आधुनिकता को अपनाने की होड़ में मानसिक तनाव के घेरा भी बढ़ता जा रहा है भौतिक सुविधाओं के कारण मनुष्य के समय पास बहुत समय हो गया है परंतु आधुनिकता को अपनाने की होड़ में मानसिक तनाव का घेरा भी बढ़ता जा रहा है दूसरी तरफ शिक्षा भी कठिन तथा छात्र केंद्रित होती जा रही है आजकल शिक्षा बच्चों की रुचि आवश्यकता तथा मानसिक स्तर के अनुरूप दी जाती है मानव के ज्ञान के लिए मनोरंजन इतना ही आवश्यक है जितना उसके शरीर के लिए व्यायाम तथा भोजन।

Topic ______ Date ______

मनोरंजन का अर्थ

किसी काम को लगातार करते रहने से हमारा मस्तिष्क थक जाता है। ऐसी अवस्था मैं अधिक कार्य करने को हमारा मन नहीं करता। ऐसी स्थिति मैं यदि आपने मन को किसी ऐसी प्रक्रिया मैं लगा ले जिससे हमैं खुशी तथा प्रसन्नता मिले तो हमारी शारीरिक तथा मानसिक थकान दूर हो जाती है और हम ताजगी महसूस कर फिर से काम करने के योग्य हो जाते हैं यह आनन्द तथा खुशी की प्राप्ति ही मनोरंजन कहलाती है। मनोरंजन का अर्थ है आनन्द की खुशी की प्राप्ति ही मनोरंजन कहलाती है। मनोरंजन के द्वारा व्यक्ति तनाव से मुक्ति पाकर शांति का अनुभव प्राप्त करता है। मनोरंजन के द्वारा मनुष्य नया उत्साह जोश और प्रसन्नता विकसित करता है।

अभिनय, नाटक, ड्रामा किसे कहते हैं
भारतीय चिंतन और अभिनय

मनुष्य आदिकाल से ही प्रकृति का अनुकरण करता आ रहा है जैसे - जैसे मनुष्य की चेतना का विकास होता गया। अनुकरण की क्रिया के फलस्वरूप उसके दिमाग प्रबन्ध मैं विभिन्न पक्षों मैं कल्पना का समावेश भी होता गया। परिणामस्वरूप मानव समाज के क्रियाकलापों एवं अनुभवों को वह अपनी क्रियाओं मैं सम्मिलित करता चला गया।

Topic ______ Date ______

अभिनय, नाटक, ड्रामा भी सम्मिलित होना प्रारंभ होते गए। इन सौंदर्य के तत्वों ने उन प्रस्तुतियों में कलात्मक का समावेश कर दिया। इस प्रकार के भ्रम के कारण उन विभिन्न आचार्यों के व्यक्त हैं जिन्होंने मानव जीवन की विभिन्न अवस्थाओं की अनुभूति कहा गया है। उदाहरण के लिए भरत ने नाटक के तीनों लोकों में जो है उनका अनुकरण बताया है लेकिन अनुकरण से उनका आशय इस संसार में जो कुछ जैसे हो रहा है उसे उसी रूप में उपस्थित करने से नहीं था अपितु उत्पन्न भ्रम के कारण का।

भारतीय महर्षियों का विश्वास है

" तमसो मा ज्योतिर्गमय।
असतो मा सद् गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय। "

भरत मुनि ने नाट्य शास्त्र के आठवें अध्याय में अभिनय शब्द की व्याख्या करते हुए छठे व सातवें श्लोक में कहा है नाट्य में दो प्रकार के धर्म प्रस्तुत किए गए हैं

(1) लोक धर्मी :→ लोक धर्मी का अर्थ है कि यदि कोई अभिनय कर्ता स्वभाव के अनुसार भाव वर्जित करने वाला हो तथा सादगी के बिना बाहरी दिखावट के कथावस्तु की समान की सामान्य आधार अवस्था के क्रियाओं को प्रदर्शित करता है

Topic ______ Date ______

नाट्य धर्मी

यदि किसी ग्रंथ अथवा इतिहास आदि में प्रसिद्ध कथा को कलात्मक परिवर्तन के साथ रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाए तो वह विरुद्ध रूढ़ियों का कोई महत्व या औचित्य नहीं होता है।

अभिनय के पश्चात अवधारणा

पश्चिमी देशों में अभिनय के लिए ऐक्टिंग शब्द का प्रयोग होता है जिसका मूल शब्द है एक्ट और उसके कारण और अनुकरण दोनों ही अर्थ इस अभिनय में किए गए हैं इसी परंपरा को लेकर शेक्सपीयर के नाटकों को लेकर में काफी कुछ लिखा है उसके अनुसार "यह विश्व एक रंगमंच है और उस पर हमारी विभिन्न क्रियाएं अभिनय मात्र हैं।

रंगमंच पर अभिनय का सूत्रपात सर्वप्रथम कायिक रूप में ही हुआ था इसलिए पूर्वकालीन अभिनय पर विचार-विमर्श सर्वप्रथम इसके वाचिक रूप पर ही प्राप्त हुआ है अरस्तू ने अपनी काव्य शास्त्र पर (आर्स पोएटिका) में अभिनय के स्वरूप की चर्चा केवल स्वास पर ही की है।

अभिनय के अंग

अभिनय रंगमंच के लिए महत्वपूर्ण आयाम है नाट्य विद्वान व नाट्याचार्य अभिनय के पांच अंग मानते हैं

(1) मुखमुद्रा
(2) शारीर भंगिमा
(3) गति
(4) वेश
(5) वाणी

Topic ______ Date ______

अभिनय के अंग

मुखमुद्रा

शरीर भंगिमा   वाणी

वेग   गति

अभिनय

इस प्रकार के गर्दन के ऊपर के विभिन्न अंगों भावों के भाव के अनुसार भंगिमाओं में परिवर्तन करते हुए उन्हें प्रयोग करने की क्रिया भाव-भंगिमा या मुखमुद्रा कहते हैं।

Topic ______ Date ______

अभिनय संप्रेषण की कला

चूँकि मनुष्य ने अपने आदि से ही स्वंय का एक सामूहिक वाणी प्राणी के रूप में विकास किया है, पारस्परिक निर्भरता इसके अस्तित्व के लिए अत्यंत आवश्यक है परिणामस्वरूप पारस्परिक संप्रेषण भी उतना ही आवश्यक है चेतना के अति विकसित रूप से पूर्व जब किसी संगठित भाषा का चलन शुरू नहीं हो पाया था तो वह प्रतीकों और संकेतों के माध्यम से स्वंय को समाज के सम्मुख अभिव्यक्त करता था। यह अभिव्यक्ति मूल रूप से उसकी दैनिक आवश्यकताओं पर ही आधारित होती थी।

कला एवं संगीत शिक्षण में संचार माध्यमों का प्रयोग

कला के शिक्षण में निम्नलिखित संचार के माध्यमों का प्रयोग किया जाता है

(1) प्रदर्शन :> चाक, फलेनल, बोर्ड, बुलेटिन, बोर्ड सूचना आरेख तथा चित्र।

(2) ग्राफिक्स :> पुस्तकें, चार्ट, ग्राफ, मानचित्र, पोस्टर आदि।

(3) त्रिआयामी :> मॉडल नमूने।

* संगीत के शिक्षण के लिए निम्नलिखित संचार के माध्यमों को प्रयोग में लिया जाता है

Topic ______ Date ______

(1) **श्रव्य उपागम :→** श्रव्य के अंतर्गत रेडियो, ट्रांजिस्टर टेपरिकार्डर, शिक्षण मशीन।

(2) **दृश्य उपागम :→** दृश्य उपागम के अंतर्गत प्रोजेक्टर, फिल्म स्ट्रिप, एपीडायस्कोप, कंप्यूटर तथा स्लाइड्स।

(3) **दृश्य-श्रव्य उपागम :→** फिल्म, दूरदर्शन, वीडियो टेप

किसी भी पाठ को रोचक व सुबोध्य बनाने के लिए यह जरूरी है कि विद्यार्थियों की शिक्षा का संबंध उनकी अधिकाधिक ज्ञानेन्द्रियों के साथ हो। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए आज शिक्षण में सहायता सामग्री का उपयोग किया जाने लगा। श्रव्य दृश्य सामग्री के अंतर्गत वह सामग्री उपकरण तथा युक्तियाँ आती हैं।

श्रव्य-दृश्य सामग्री का अवधारणा

श्रव्य-दृश्य सामग्रियों का वर्गीकरण अनेक आधारों पर किया जाता है। प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं

श्रव्य-दृश्य सामग्री का वर्गीकरण

- इंद्रियों के आधार पर
  - (a) श्रव्य सामग्री
  - (b) दृश्य सामग्री
  - (c) श्रव्य-दृश्य सामग्री
- तकनीक के आधार पर
  - (a) सॉफ्टवेयर
  - (b) हार्डवेयर
- प्रक्षेपण के आधार पर
  - (a) प्रक्षेपित सामग्री
  - (b) अप्रक्षेपित सामग्री

Topic ____________ Date ________

इंद्रियों के आधार पर

(a) **श्रव्य सामग्री** :→ इस प्रकार की सामग्री के माध्यम से छात्र श्रव्य ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से ज्ञान का अर्जित करता है। जैसे रेडियो पर जब कोई भजन या गान बजता है तो छात्र उसे सुनकर याद करते हैं। रेडियो तथा टेपरिकॉर्डर इसके प्रमुख साधन हैं। इस प्रकार के उपकरणों में छात्र नवीन संगीत के आयाम तक पहुँचकर ज्ञान प्राप्त करता है।

(b) **दृश्य सामग्री** :-
दृश्य सामग्री के प्रयोग से ज्ञान प्रत्यक्षीकरण द्वारा प्राप्त होता है अर्थात विषय से संबन्धित दृश्य सामग्री को देखकर छात्र ज्ञान अर्जित करता है क्योंकि किसी भी वस्तु को देखकर छात्र ज्यादा रुचि लेता है उसे ध्यान से समझते हैं। दृश्य सामग्री के अंतर्गत चित्र, मॉडल, ब्लैक बोर्ड, संग्रहालय आदि आते हैं।

(c) **श्रव्य-दृश्य सामग्री** :→ श्रव्य दृश्य सामग्री के प्रयोग से आँख और कान दोनों से कार्य करना पड़ता है। जैसे कार्टून जो भिन्न-भिन्न क्रिया करके आवाज निकालते हैं छात्र आँखों से देखकर तथा कानों से सुनकर शिक्षा संबन्धित बिंदुओं को याद रखने का प्रयास करता है। दृश्य सामग्री द्वारा ज्ञान में परिशुद्धता तथा स्पष्टता का होना चाहिए।

इसके बिना दृश्य श्रव्य सामग्री उपादेय नहीं होती। इस सामग्री के अंतर्गत कंप्यूटर, टेलीविजन, ड्रामा, चलचित्र सहायक सामग्री, फिल्में तथा रेडियो, टेलीविजन आदि सम्मिलित हैं।

Topic ______ Date ______

तकनीक के आधार पर

(a) सॉफ्टवेयर :-> सॉफ्टवेयर के अंतर्गत चार्ट, चित्र, ग्राफ पुस्तकें, कार्टून तथा मॉडल आते हैं।

(b) हार्डवेयर :-> हार्डवेयर के अंतर्गत रेडियो कम्प्यूटर प्रोजेक्टर एपीडायस्कोप आदि आते हैं।

प्रक्षेपण के आधार पर

(a) प्रक्षेपित सामग्री :-> प्रक्षेपित सामग्री के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के चार्ट प्रतिरूप तथा चित्र, फिल्म स्लाइड आदि आते हैं।

(b) अप्रक्षेपित सामग्री :-> इस सामग्री के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के चार्ट तथा प्रतिरूप निर्देश रखे जाते हैं।

दृश्य-श्रव्य सामग्री की विशेषताएँ

(1) मौखिक बात को कम करते हैं।
(2) यह अनुभवों के द्वारा ज्ञान प्राप्त करती है।
(3) छात्र अधिक सक्रिय रहते हैं।
(4) कला तथा संगीत में अधिक आनंद ले सकते हैं।
(5) भाषा संबंधी कठिनाइयों को दूर करती है।
(6) पाठ में रोचकता आती है।

25/5/17